सत्यमेव जयते

श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

आत्मनिर्भर भारत मिशन का शुभारम्भ

दिनांक 02 अक्टूबर, 2020 **समय दोपहर : 12.30 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय व एम्पलोयर एसोसिएशन ऑफ राजस्थान के संयुक्त तत्वाधान में आत्मनिर्भर भारत मिशन विषय पर आयोजित व्याख्यान में उपस्थित कुलपति प्रो0 एच. डी. चारण जी, उपस्थित महानुभावगण, प्राध्यापकगण, विद्यार्थियों, भाइयों और बहिनों।

आत्मनिर्भर भारत अभियान वर्तमान में कोविड–19 के बाद की एक मूल अवधारणा है। यह एक महत्वकांक्षी राष्ट्रीय परियोजना है, जिसका उद्देश्य सिर्फ कोविड–19 महामारी के दुष्प्रभावों से लड़ना नहीं, बल्कि भविष्य के भारत का पुनर्निर्माण करना है।

कोविड–19 के बाद भारत को अब एक नई प्राणशक्ति, नई संकल्पशक्ति के साथ आगे बढ़ना है और विश्वमहाशक्ति बनना है। भारत सरकार ने कोरोना संकट से जुड़ी जो आर्थिक घोषणाएं की थीं, वह रिजर्व बैंक के फैसले थे और जिस आर्थिक पैकेज का ऐलान हुआ है, उसे जोड़ दें तो यह करीब–करीब 20 लाख करोड़ रुपये का है।

यह पैकेज भारत की जीडीपी का करीब–करीब 10 प्रतिशत है। 20 लाख करोड़ रुपये का ये पैकेज, 2020 में देश की विकास यात्रा को, आत्मनिर्भर भारत अभियान को एक नई गति देगा।

भारत में, स्वदेशी, एक विचार के रूप में देखा जाता है, जो भारत की संरक्षणवादी अर्थव्यवस्था का आर्थिक मॉडल रहा है। राष्ट्र इस विचार की वकालत भी करता रहा है। आत्मनिर्भर भारत बनाने में स्वदेशी का विचार काफी उपयोगी है। खादी ग्राम उद्योग के उत्पादों की बढती मांग इसका उदाहरण है। दशकों तक, भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया के लिए खुली नहीं थी। बाहरी दुनिया पर संदेह और आत्मविश्वास में कमी भी थी। पिछली शताब्दी के अंतिम चार दशकों के भारत ने स्वदेशी मॉडल पर भरोसा करते हुए, पाँच साल की नियोजित अर्थव्यवस्था का अनुसरण किया और 2.5 से 3 प्रतिशत विकास दर के साथ वृद्धि की।

भारत को अपने आर्थिक संकटों की वजह से साल 1991 में बाहरी दुनिया के लिए अपने दरवाजे खोलने पड़े। भारत एक बार फिर आत्मनिर्भर बनने के लिए भीतर की ओर देख रहा है. भारत की आत्म–निर्भरता का मतलब दुनिया से कनेक्शन तोड़ लेना नहीं है। वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के ऐसे दौर में, जब अमरीका के स्टॉक मार्केट की हर एक हलचल चीन और भारत के बाजारों पर सीधा असर डालती है। उस वक्त स्थानीय उत्पादों का उत्पादन करने और उन्हें प्रतिस्पर्धा में खड़ा करने के लिए स्थानीय उद्यमियों और निर्माताओं को कुछ सुरक्षा राशि भी देने की आवश्यकता है।

भारत के लिए आत्मनिर्भरता ना तो बहिष्करण है और ना ही अलगाववादी रवैया जोर इस बात पर है कि दक्षता में सुधार किया जाये। इसके अलावा दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए दुनिया की मदद की जाये। कोरोना महामारी के बाद आर्थिक राष्ट्रवाद का रूप पूरी दुनिया में आ सकता है।

आत्मनिर्भरता और स्वदेशी मॉडल ही भारत को आगे ले जा सकता है। हमें लोकल चीजों को लेकर वोकल होना चाहिए। यानी भारतीयों को स्थानीय चीजों के बारे में ज्यादा बात करनी चाहिए, खुलकर बात करनी चाहिए। आत्मनिर्भरता वैसे भी हर देश का एक वांछित सपना है। भारत का मेक इन इंडिया प्रोजेक्ट, भारत को मैन्युफैक्चरिंग का हब बनाने में भूमिका निभा सकता है।

इन्फ्रास्ट्रक्चर यानी बुनियादी ढाँचा चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए या भारत में निवेश करने के लिए, चीन स्थित विदेशी कंपनियों को आकर्षित करने के लिए, भारत को विश्व स्तर के बुनियादी ढांचे का निर्माण करना होगा। भूमि, पानी और बिजली में सुधार की जरूरत है। सिस्टम यानी प्रणाली में अत्याधुनिक तकनीक को अपनाना और समाज में डिजिटल तकनीक का उपयोग बढ़ाना जरूरी है। यह अर्थव्यवस्था का चालक साबित हो सकता है।

वाइब्रेंट डेमोक्रेसी यानी जीवंत लोकतंत्र भारत की मुख्य ताकत है। चीन भारत का मुकाबला नहीं कर सकता है। वो उद्यमी और निर्माता जो लोकतंत्र, मानवाधिकार और बाल शोषण के उन्मूलन को महत्व देते हैं, वो साम्यवादी चीन के स्थान पर भारत के साथ डील करना चाहेंगे। डिमांड यानी मांग भारत का घरेलू बाजार निवेशकों के लिए सबसे आकर्षक पेशकशों में से एक है।

वर्तमान में डिमांड हल्की है, लेकिन कोविड–19 के बाद की दुनिया में एक बार फिर भारत को शुरुआत करनी होगी, जिसके लिए कई छोटे और मध्यम उद्यमियों को सरकारी प्रोत्साहन की आवश्यकता होगी। सभी यह मान भी रहे हैं कि आत्मनिर्भरता केवल छोटे और मझौले उद्योगों की मदद से ही हासिल की जा सकती है। आज का ज्वलंत मुद्दा है कि कोरोना महामारी से जर्जर हो चुकी देश की अर्थव्यवस्था को दोबारा पटरी पर कैसे लाया जाए।

वर्तमान प्रचलित उपचार पद्धति कहती है कि कोरोना की दवा किसी के पास नहीं, परंतु भारत की हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन जैसी दवा मांगने के लिए दुनिया के तमाम देशों ने गुहार लगाई।

आयुर्वेदिक काढ़े व जड़ी–बूटियों आदि की मांग भी बढ़ रही है। दूसरी ओर वैश्विक सामाजिक–आर्थिक संरचनाएं भी इस समय निरर्थक सिद्ध हो रही हैं और भारत जैसे देश का मुंह ताक रही हैं।

भारतीय प्रतिभाओं ने जिस स्वदेशी प्रतिमान को कभी इस देश में खड़ा किया, कोरोना महामारी से लड़खड़ाती दुनिया उसे बड़ी आशा से निहार रही है। इसलिए जरूरी हो गया है कि इसे एक विमर्श का मुद्दा बनाया जाए।

इस समय राष्ट्र के आर्थिक पुनर्निर्माण में दो प्रकार के विषयों को छुआ हुआ है, तात्कालिक व दीर्घकालीन। तात्कालिक कामों में पहले उल्लेख किया गया, शहरों से गांव लौटते हुए मजदूरों का।

क्या हम गांव में ही उन्हें रोजगार के नए नए अवसर उपलब्ध करा सकते हैं? ऐसे में महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज, एपीजे अब्दुल कलाम के 'पूरा' (प्रोविजन ऑफ अरबन एमिनीटिज इन रूरल एरियाज) से लेकर नानाजी देशमुख के समग्र विकास तक के उदाहरणों के संदर्भ ताजा हो गए हैं।

ग्राम विकास के कार्यों में लगे हजारों लोगों का परिश्रम और प्रयोगधर्मिता इसकी अधोरचना है। ऐसे में इन लाखों कामगारों को गांव में ही रोजगार मुहैया करवा कर एक बड़ी समस्या का समाधान खोजा जा सकता है।

दूसरा तात्कालिक काम है, गांव से दोबारा शहर जाने वालों के लिए काम– धंधे ढूंढना। चूंकि अधिकांश उद्योग बंद हैं, वैश्विक मांग में भी भारी कमी हो गई है। ऐसे में दोबारा उन्हें खपाने व रोजगार दिलाने की कितनी क्षमता यहां है, इसे देखना पड़ेगा। वे उद्योग भी घाटे में चल रहे होंगे।

लिहाजा आपसी सद्भाव व समझदारी से दोनों को कुछ न कुछ छोड़ना पड़ेगा। यानी पुनर्निर्माण में मालिक–मजदूर का समन्वय आवश्यक है। तीसरा बड़ा दीर्घकालीन विचार विकास का वैकल्पिक मॉडल है। 'स्वावलंबन' एक संकेत दे रहा है कि किस प्रकार इस समय शासन 'विकेंद्रित' आर्थिक संरचना के लिए तैयारी करना जरूरी है। कोरोना महामारी आज एलपीजी मॉडल (लिबरेलाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन व ग्लोबलाइजेशन) के खोखलेपन को उजागर कर रही है।

यह बाजार की ताकतों का बनाया हुआ प्रतिमान था, जो इस समय दम तोड़ रहा है। उसकी जगह ग्राम स्वराज्य व जिलों पर आधारित अर्थव्यवस्था का आत्मनिर्भर मॉडल इस महामारी रूपी आपत्तिकाल का मंत्र है। इसी को आगे बढ़ाते हुए 'स्व' शब्द और स्वदेश के विकास मॉडल को विकसित करना। चौथी बात यह है कि आधुनिक विज्ञान का प्रयोग हो, परंतु अपनी परंपरा का भी ध्यान रखना चाहिए।

आज विदेशी विकास मॉडल की खामियां जगजाहिर हैं। यह अत्यधिक उर्जाभक्षी, रोजगारविहीन व पर्यावरणभक्षक हैं। ऐसे मॉडल की गहन विवेचना दत्तोपंत ठेंगड़ी ने पुस्तिका 'द कॉन्सेप्ट ऑफ डेवलपमेंट एंड थर्ड वे' में की है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय व गांधीजी ने भी हिंद स्वराज में इस पश्चिमी मॉडल की धज्जियां उड़ाई हैं।

विदेशों में भी इस विकास मॉडल की चीर–फाड़ हुई है। सिंगापुर यूनिवर्सिटी की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि कोरोना के फैलाव का मुख्य कारण अति–शहरीकरण, वैश्वीकरण तथा अत्यधिक संपर्क है। जहां–जहां पश्चिम मॉडल प्रसिद्ध हुए, वहां इसके दुष्परिणामों के कारण इसका विरोध हुआ है, इसलिए कोई विकेंद्रित व आत्मनिर्भर मॉडल ही इन बीमारियों से बचा सकता है।

एक अहम प्रश्न यह है कि इस वैकल्पिक स्वदेशी संरचना को कौन लागू करेगा। दरअसल यह तीन स्तरों पर हो सकता है। शासन, प्रशासन एवं समाज द्वारा।

शासन प्रमुख रुचि दिखा रहे हैं। सरपंचों के साथ अपनी वार्ता में प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर मॉडल के चार पायदान बताए– गांव, जिला, प्रांत व देश। जहां तक प्रशासन का सवाल है तो कायदे से वह उसी को करने को प्रतिबद्ध है, जिसे शासन कहेगा या उनसे करवा लेगा। तीसरा काम समाज को करना होता है और वह काम सतत व नियोजित जनजागरण से होता है।

जीवन में स्वदेशी अपनाने पर पूरा जोर देना होगा। जीवन के लिए जो आवश्यक है, उसे यहां तैयार करना होगा और उसकी गुणवत्ता पर कोई समझौता नहीं होना चाहिए। आज नई चुनौती चीन से अत्यधिक आयात की है। प्रति वर्ष 54 से 64 अरब डॉलर का व्यापार घाटा हमें चीन से हो रहा है। जिस प्रकार कोरोना महामारी के बाद भी दुनिया को घेरने में चीन संलग्न है, वह एक खतरे की घंटी है। इस कारक को समझना होगा।

इस समय दुनिया के अधिकांश देश चीन से त्रस्त हैं, वहां से कंपनियां आज अन्य देशों में जाने को आतुर हैं। ऐसे में भारत को अपनी बड़ी भूमिका निभानी होगी। साथ ही स्वदेशी ज्ञान व विज्ञान संवर्धन भी आवश्यक है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, जैविक कृषि, योग, आयुर्वेद आदि को बढ़ावा देना होगा।

धन्यवाद। जयहिन्द।